भटकाव के बाद मंज़िल की ओर

ब्रह्माकुमारी सुमन, अलीगंज (लखनऊ)

ईश्वरीय मार्ग पर चलने वाले राही को, परमात्मा पिता तथा ईश्वरीय परिवार का भरपूर स्नेह और सहयोग मिलता है जिस कारण नई-नई अनुभूतियाँ होने लगती हैं, उमंग-उत्साह के पंख लग जाते हैं, हर कदम पर सफलता मिलने लगती है। ज्ञान-योग पर पूरा ध्यान होने के कारण माया (विकार) वार नहीं कर पाती। परंतु यदि ज़रा भी उमंग कम हो जाए या कोई पुराना संस्कार जाग जाए तो हार खाने वाली माया पुन: वार करती है, छिपकर अर्थात् नए-नए रूपों में वार करती है और आगे बढ़ते कदमों को पीछे खींच लेती है। माया के एक रॉयल रूप की कथा इस प्रकार है –

दीपक नाम का एक कुमार बड़ा अच्छा पुरुषार्थी दिखता था। ज्ञान में नया होने के कारण वह सभी का प्रिय था और शिव बाबा भी जैसे उसे अंगुली पकड़कर चला रहे थे। वह उमंग-उत्साह में मस्त रहता था। सोच सकारात्मक होने के कारण लौकिक कार्य में भी शत-प्रतिशत सफलता मिलती जा रही थी। लेकिन धीरे-धीरे उस पर, घरवालों की ओर से अधिक ज़िम्मेवारियों का दबाव पड़ने लगा। वह लौकिक कार्य में अधिक व्यस्त रहने लगा, अमृतवेले सुस्ती आने लगी। याद व प्राप्तियों की खुशी में मस्त रहने के बजाय नींद के आगोश में मस्त रहने लगा। फिर सोचता, क्लास में जल्दी जाकर योग का चार्ट पूरा कर लूंगा। धीरे-धीरे व्यस्तता के कारण ईश्वरीय सेवा के हर सुअवसर को गंवाने लगा जिससे संगठन व परिवार से दूर हो गया। ईश्वरीय सेवा में कौन-सी स्थूल कमाई होती है, इस विचार से रहा-सहा उमंग भी खत्म हो गया। धीरे-धीरे क्लास में देर से आने लगा। मुरली, खुद ही अखबार की तरह फटाफट पढ़ लेता जिससे मुरली का रस लगभग खोने-सा लगा। फिर सोचता, मुरली घर पर लाकर आराम से पढ़ लूंगा। कभी-कभी क्लास में बिल्कुल जाता ही नहीं, फिर रविवार को जाने का नियम बनाया। फिर सोचा, बाबा हर मुरली में याद करने के लिए ही तो कहता है, सो तो हम घर पर ही कर लेंगे व कर्मयोगी बनने का ही तो सारा ज्ञान है, इसलिए कर्म करते भी बाबा को याद करेंगे। परंतु घर में क्या ज्ञान-योग हो पाएगा, सब अनुभवी हैं। कर्मयोग का अभ्यास ही नहीं तो कैसे हो पाएगा? धीरे-धीरे मुरली छूटी, क्लास छूटी, सेवा छूटी, घर के लौकिक वायुमंडल में योग लगता नहीं, अमृतवेले का योग भी छूट गया। अब न ज्ञानबल रहा, न योगबल, न सेवा का बल, न संगठन का बल, माया (विकारों) को तो इसी मौके की तलाश थी। अब परीक्षायें आनी शुरू हो गईं, धारणायें कमज़ोर होती गईं, खान-पान बिगड़ता गया, संग बदलता गया, मानसिकता परिवर्तन होती गई। अब काम में पस्त, कमाई में मदमस्त, ज्ञान-योग में दिलशिकस्त होने के कारण जीवन में स्वार्थी संबंधों से मन की खींचा-तान शुरू हो गई। जो उसे करना चाहिए उसकी उसमें ताकत नहीं, जो नहीं करना चाहिए वही उसे अच्छा लग रहा है। मन खाली रह नहीं सकता और कमज़ोर होने के कारण शक्तिशाली व ऊर्जावान संकल्प कर नहीं सकता। इस प्रकार माया ने एक दिन उसे पूरा ही ध्वस्त कर दिया और उसके ज्ञान का सूर्य पूरा ही अस्त हो गया।

एक दिन उसकी ऐसी हालत पर एक अनुभवी ब्रह्मावत्स को बड़ा रहम आया। उसने कहा, कोई बात नहीं, हिम्मतहीन नहीं बनो, अभी एक युक्ति है। माया शक्तिवान है तो क्या, भगवान भी सर्वशक्तिवान है। आधाकल्प से मदमस्त माया तुम युवाओं को अपना शिकार बनाने में अभ्यस्त हो चुकी है पर उसे अपदस्थ करने का बीड़ा शिव बाबा ने तुम युवाओं को ही दिया है। अपनी सर्वशक्तियों का प्रयोग तो करके देखो। भगवान को तुम नव सैनिकों पर पूरा भरोसा है। इसलिए उठो और इस बार माया का पूरा ही बंदोबस्त करने के लिए मन में दृढ़ता की बेल्ट बाँध आ जाओ मैदान में और मुरली एवं योग के क्लास के समय के सारे कार्य निरस्त कर दो। उसने ऐसा ही किया और वह विजयी हो गया।

❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510,
आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org